वेदों की ओर लौटो !

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनो !

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
**मासिक मुखपत्र**

# वैदिक गर्जना

वर्ष १८ अंक १० १० अक्टूबर २०१८

तपस्वी व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी
पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

20 से 22 अक्टूबर 2016

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

**अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं!**

राज्यस्तरीय
श्रावणीवेदप्रचार

पुणे की आर्यसमाज वारजे में वेदपारायण यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते हुए श्री व सौ.वेलानीजी एवं अन्य। साथ में हैं यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री ओमव्रतजी।

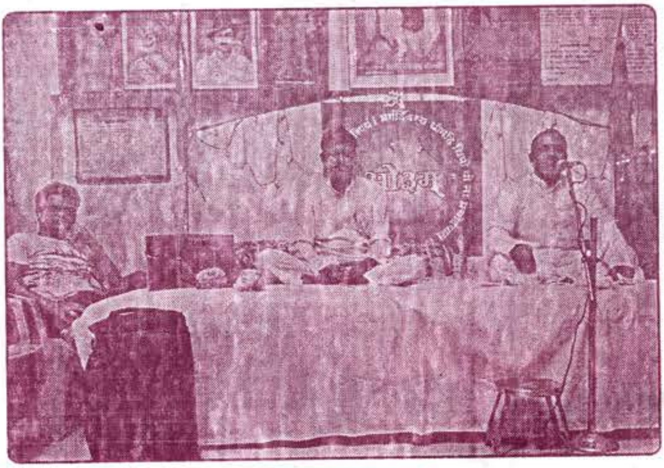

नासिक की पंचवटी आर्यसमाज में आर्यजनों को संबोधित करते हुए आचार्य डॉ.ओमव्रतजी। साथ में हैं आर्यभजनोपदेशक पं.सुखपालजी आर्य।

आर्य समाज औराद शहाजानी में मासिक श्रावणी यज्ञ की पूर्णाहुति पर आहुतियां प्रदान करते हुए यजमान परिवार।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

# वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९ | कलि संवत् ५११९ | विक्रम संवत् २०७५

दयानन्दाब्द १९४ | अश्विन | १० अक्टूबर २०१८



प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक
प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४१७७७) प्रा.ओमप्रकाश होलीकर(९८८१२१५६१६),
प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)


## अनुक्रम

### हिन्दी विभाग


१) श्रुतिसुगन्ध ........ ४
२) सम्पादकीयम् ........ ५
३) निमन्त्रण आर्य महासम्मेलन का ! ........ ८
४) पाताल देश से एक पत्र ........ १०
५) समाचार दर्पण ........ १२
६) शोक समाचार ........ १५


### मराठी विभाग


१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी ........ १७
२) प्रखर सत्यवादी व विज्ञाननिष्ठ म.दयानन्द ........ १८
३) महाराष्ट्रात दरवळला वेदज्ञानाचा परिमळ........ २२
४) वार्ताविशेष ........ २५
५) शोकवार्ता ........ २७
६) राज्यस्तरीय दोन वक्तृत्त्व स्पर्धा-सूचना........ २९
७) सभेचे मानवकल्याणकारी उपक्रम ........ ३०



* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-



इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

## श्रुतिसुगंध ईश्वर के उपासक कैसे होते हैं?

अपश्य गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसानऽआ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः।।

(यजु.३७/१७)

**पदार्थान्वय–** हे मनुष्यो! मै जिस(**पथिभिः**) शुद्ध ज्ञान के मार्गो से(**आ, चरन्तम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होते हुए(**परा**) परभाग में भी प्राप्त होते हुए (**अनिपद्यमानम्**) अचल (**गोपाम्**) रक्षक जगदीश्वर को(**अपश्यम्**) देखूं (**स, च**) वह भी (**सध्रीचीः**) साथ वर्तमान दिशाओं(**च**) और(**सः**) वह (**विषूचीः**) व्याप्त उपदिशाओं को(**वसानः**) आच्छादित करनेवाला हुआ (**भुवनेषु**) लोक लोकान्तरों के (**अन्तः**) बीच (**आ, वरीवर्ति**) अच्छे प्रकार सबका आवरण करता वा वर्तमान है, उसको आप लोग भी देखो।

**भावार्थ –** जो मनुष्य सब लोकों में अभिव्यापी अन्तर्यामी रूप से प्राप्त अधर्मी अविद्वान् और अयोगी लोगों के न जानने योग्य परमात्मा को जानकर अपने आत्मा के साथ युक्त करते हैं वे सब धर्मयुक्त मार्गों को प्राप्त होकर शुद्ध होते है।

# आर्य समाजों को सूचना

महाराष्ट्र सभांतर्गत सभी आर्य समाजें अपने श्रावणी वेदप्रचार पर्व की विस्तृत जानकारी सभा कार्यालय तुरंत भेजें। ताकि उसे वैदिक गर्जना मासिक में प्रकाशित किया जा सके...! - **सम्पादक**

भारतीय विजय पर्व दशहरा के
पावन अवसरपर सभी देशवासियों को
हार्दिक शुभकामनायें..!

## संपादकीयम् आर्यशक्ति का हो शुभ उदयन..!

पर्व, उत्सव या सम्मेलन मनाने का उद्देश्य ही होता है जनमानस में नवचेतना का संचार! बढती शिथिलता को दूर करने तथा अपने अस्तित्त्व का बोध कराने के लिए कृतसंकल्पित होने का यह पवित्र शुभ अवसर! संगठनशक्ति संवर्धन के साथ ही सैद्धान्तिक निष्ठा और आत्मोन्नति के लिए इसे सुनहरा मौका माना जायेगा। इस दृष्टि से हर्षानुभूति का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मनिष्ठ, उत्साही पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं ने विधायक उपक्रमों के साथ ही आर्य महासम्मेलनों के माध्यम से आर्य समाज की शक्ति को जीवित रखने का पुनीत कार्य जारी रखा है। सन २००६ से प्रतिवर्ष देश-विदेशों में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों का सफलतापूर्वक आयोजन कर आर्यों में नई स्फूर्ति, ऊर्जा व नवशक्ति लाने का प्रशंसनीय कार्य वे कर रहे हैं। इससे निश्चय ही आर्यत्व की शान व मान बढते रहेगी। छः वर्षों के बाद राजधानी दिल्ली में होने जा रहा यह 'आर्यों का महाकुम्भ' आर्यों में नवोत्साह भर देगा। बढती वैश्विक समस्याओं के प्रति आर्यसमाज का उत्तरदायित्व व कर्तव्यों के प्रति सजग रहने, आत्मावलोकन करने तथा व्यक्तिगत जीवन के निर्माण में जागरुकता लाने के लिए यह महासम्मेलन काफी सहाय्यक माना जायेगा।

यूं तो आजकल विभिन्न संस्थाओं व संगठनों द्वारा भीड इकट्ठा करने के अनेकों कार्यक्रमों की धूम मची हैं। साम्प्रदायिक लोगों की तीथयात्राएं, मेले, सत्संग, संत-समागम, गुरु दर्शन पर्व आदि बडे पैमाने पर बढ रहे हैं। अनेकों धनी-मानी लोग अपने आराध्य देवताओं की पूजा, दर्शन, अभिषेक आदि के लिए लाखों रूपयों का धन व समय बरबाद करते हैं। तीर्थयात्राओं के माध्यम से तो अब नया व्यापार शुरु है। यह सब घोर अंधविश्वास व विवेकहीनता का परिणाम है। सर्वत्र सम्प्रदायों, मत व जाति पन्थों के धार्मिक पाखण्डों, अन्धविश्वासों व रुढिवादिता से सर्वत्र वातावरण दूषित हो चुका है। एक ओर दिनोदिन बढती भौतिकता, असभ्यता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद तथा कुसंस्कारों के चलते सामान्य जनता परेशान है, तो दूसरी ओर बुद्धिजीवी वर्ग आधुनिक विज्ञान के चलते सत्य, सुख और आनन्द की तलाश में है। सारी दुनिया को सच्चे अर्थों में सुख व आत्मकल्याण का मार्ग चाहिये, लेकिन यह मार्ग दिखानेवाला आज कोई नहीं है। ये मत-संप्रदाय संसार के भलाई की तो बात करते हैं, किन्तु इनके पास वह सत्य व शाश्वत सुख का कोई उपाय नहीं है। सिर्फ 'आर्य समाज' ही एकमात्र तरणोपाय है।

ऐसे में यदि आर्य समाज नहीं जगेगा और दुनिया को सत्यार्थ की राह नहीं बतायेगा, तो फिर यह कार्य और कौन करेगा? क्योंकि इसके पास ही तो ईश्वरीय सत्यज्ञान की अमूल्य निधि है- जिससे अखिल विश्व को शाश्वत सुख, शान्ति व आनन्द की उपलब्धि हो सकती है। इस दृष्टि से आर्य समाज के कार्यक्रम अथवा महासम्मेलन निश्चय ही नयी जागृति लाने का कार्य करेंगे। दूसरी ओर जाति व सम्प्रदायवाले, राजनैतिक व अन्य सामाजिक संगठन अपने-अपने प्रचार व प्रसार में जमकर लगे हैं। तरह-तरह की योजनायें, उपक्रम और कार्यक्रम चलाकर अपने अस्तित्व व शक्ति को बढाने में वे कतही पीछे नहीं है। तो फिर इसमें आर्यसमाज पीछे क्यों रहे? क्योंकि इस संस्था को महर्षि दयानन्द जैसे पुण्यात्मा द्वारा सहस्त्रों वर्षों बाद वेदज्ञान की अपूर्व निधि प्राप्त हुई है। आर्य समाज का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सारे विश्व को आर्य याने की श्रेष्ठ मानव बनाने का संकल्प है, तो फिर इसके लिए क्या हम सचमें प्रयास करते हैं? इसपर चिन्तन की आवश्यकता है। आर्यसमाज का मतलब सर्वोन्नति का विचार! मानवता का यह सच्चा सजग प्रहरी है! सार्वजनिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक स्तर पर आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करनेवाला यह विशुद्ध वैदिक ज्ञान प्रसार का संगठन, जिसका एक-एक सदस्य समूचे मानव समाज के लिए पथप्रदर्शक बन सकता है ।

आर्य समाज का अतीत बहुतही उज्ज्वल रहा है। महर्षि दयानन्द के पश्चात् उनके अनुयायियों के असीम तप, त्याग व बलिदान से आर्य समाज की बगिया हरीभरी रही है। देश की स्वन्तन्त्रता हो या सामाजिक सुधार का क्षेत्र! इसके लिए ऋषिभक्त रातदिन लगे रहें। विशेषकर आर्य सिद्धान्तों की उन्होंने जी जान से रक्षा की। शिक्षाप्रसार हो या गुरुकुल शिक्षापद्धति, अनेकों आचार्यों व विद्वानों ने इसके के लिए पूरा जीवन लगाया। साधकों ने अध्यात्म पथ को बनाये रखा। प्रचारकों ने भूखे-प्यासे रहकर वेदज्ञान को मिशनरी भाव से जन-जन तक पहुंचाने में कोई कसर नहीं छोडी। इन सब के मूल में थी उनकी सैद्धान्तिक निष्ठा, आध्यात्मिक साधना व उनका नैतिक वजन। इसी कारण आर्यसमाज की दुनिया में एक अलग प्रतिष्ठा थी। सामान्य आर्य समाजी व्यक्ति भी पूर्ण विश्वासपात्र था। आज वह सबकुछ कहाँ गया? यह महान वैचारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व आध्यात्मिक संगठन आज किस किस दिशा में हैं....? जब कि इसकी प्रासंगिकता तो आज सर्वाधिक है।

ऐसे में दुनिया को सत्यपथ बताने के लिए आर्य समाज तत्पर होगा, तो ही हमारे प्रयास सफल होंगें। आर्य महासम्मेलन के माध्यम से आर्यशक्ति का उदय हो व सबका आत्मकल्याण मार्ग सुकर हो, यही अपेक्षा...! - नयनकुमार आचार्य

चलो दिल्ली! ओ३म् चलो दिल्ली!!

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

## भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

## दिल्ली (भारत)

25 से 28 अक्टूबर 2018

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी संवत् २०७५

-: सम्मेलन स्थल :-

## स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली, भारत

महासम्मेलन में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

संगठनात्मक एकता हेतु लाखों की संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

सुंदर व्यवस्था हेतु सम्मेलन में आने से पूर्व महासम्मेलन कार्यालय में अपना पंजीकरण अवश्य करा लें।
पंजीकरण वैबसाईट पर भी किया जा सकता है। आगंतुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

अपील :- महासम्मेलन की सफलता हेतु " दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018" के नाम से क्रास चैक / ड्राफ्ट सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करें।

महासम्मेलन हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान/सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है

निवेदक

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुरेश चन्द्र आर्य | महाशय धर्मपाल | प्रकाश आर्य | धर्मपाल आर्य |
| प्रधान | अध्यक्ष | मंत्री | सम्मेलन संयोजक |
| सा. आर्य प्रतिनिधि सभा | स्वागत समिति | सा. आर्य प्रतिनिधि सभा | प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा |
| +91 9824072509 | +91 11 25937987 | +91 9826655117 | +91 9810061763 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| स्वामी श्रद्धानंद | डॉ.ब्रह्ममुनि | योगमुनि | राजेन्द्र दिवे | उग्रसेन राठौर |
| संरक्षक | मार्गदर्शक | प्रधान | मन्त्री | कोषाध्यक्ष |

## सभी पदाधिकारी एवं सदस्य, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

# निमन्त्रण अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का !

**- विनय आर्य(उपमन्त्री, सार्व.आर्य प्र.सभा)**

आर्यजनों को यह विदित ही है कि **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा''** के संयुक्त तत्त्वावधान में **''अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–२०१८ दिल्ली''** का आयोजन दिल्ली में **दि.२५–२६–२७ एवं २८ अक्तूबर, २०१८** तक किया जा रहा है । अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की परम्परा का आरम्भ वर्ष १९२७ में दिल्ली से हुआ था। तब से आर्यों के विशाल संगठन के ये आयोजन देश–विदेश में होते रहे। वर्ष २००६ के दिल्ली महासम्मेलन में लिए गए संकल्प के आलोक में इन महासम्मेलनों की श्रृंखला विदेशों में पुन: आरम्भ हुई और तब से लेकर अब तक अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, दिल्ली–२०१२, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर–थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल एवं बर्मा में आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए हैं। अब यह महासम्मेलन पुन: दिल्ली में आयोजित हो रहा है। देश–विदेश में इसकी तैयारियां आरम्भ हो चुकी हैं।

हमारा सौभाग्य है कि आर्य समाज के संस्थापक और १९वीं सदी के महान उन्नायक, वेदोद्धारक, महर्षि देव दयानन्द जी सरस्वती के जन्म के २०० वर्ष २०२४ में पूर्ण हो रहे हैं। वर्ष २०१८ से २०२४ तक सार्वदेशिक सभा द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्विशताब्दी जन्म समारोंहों के आर्यजनों का प्रारम्भ भी इस महासम्मेलन के साथ–साथ किया जाएगा। सम्मेलन के प्रचार–प्रसार तथा आर्यजनों में इसके प्रति उत्साह पैदा करने का दायित्व विशेष रूप से प्रचार–प्रसार संसाधनों पर ही निर्भर है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज की वर्तमान स्थितियों, विश्व के तेजी से बदलते परिवेश तथा तकनीकी परिवर्तनों से पूर्णतया अवगत है तथा उसी के अनुरुप आर्यसमाज की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनेक विशेष योजनाओं का निर्माण भी किया गया है । इस महासम्मेलन में विश्व के कोने–कोने से पधारे महानुभाव उन सब नए कार्यक्रमों और योजनाओं की सही जानकारी भी ले सकेंगें तथा अपने क्षेत्र में कार्य बढाने के लिए उनका उपयोग भी कर सकेंगे। कुल मिलाकर हम ये यह कह सकते हैं कि आर्यसमाज को एक नए युग की ओर ले जाने के लिए सन् २००६ में विश्व में फैले इस संगठन की सही स्थितियों का अनुमान सार्वदेशिक सभा

को उतना अधिक नहीं था, जितना कि गत १० वर्षों में हुए अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों के सफर के पश्चात् आज है। आज यह अहसास हो रहा है कि हमारे पूर्वजों ने कितनी शक्ति लगाकर दुर्गम परिस्थितियों में इन देशों में आर्यसमाज की नींव डाली थी। उनको स्थिर रखना और आगे बढाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

दिल्ली में आयोजित होनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियां अन्तिम दौर में हैं। देश-विदेश से आनेवाले लाखों आर्यजनों के लिए सम्मेलन स्थल-स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.१०, रोहिणी दिल्ली में महर्षि दयानन्द नगर निर्माण कार्य जोरों पर है। मुख्य पण्डाल, यज्ञशाला, प्रमुख संगठनों के कार्यालय, पुस्तक बाजार, पार्क, जन सुविधाएं, सडकें, भोजनालय, आवासीय ब्लाक, मुख्य द्वार, अतिथि आवास, पूर्णकालिक यज्ञशाला, गौशाला आदि सभी सुविधाओं से सुसज्जित महासम्मेलन स्थल में बननेवाला महर्षि दयानन्द नगर आप सभी के स्वागत के लिए सज रहा है। कार्यकर्त्ता दिन-रात लगकर इसके सौन्दर्य को निखारने का कार्य कर रहे हैं। पहले महासम्मेलनों से और अधिक सुन्दर, सुसज्जित, सुविधाओं से परिपूर्ण महर्षि दयानन्द नगर में कई द्वार बनाए गए हैं। सभी देश-विदेश के नेताओं, समाजसेवियों, संतो से मिलकर सम्मेलन में पधारने का निमंत्रण दिये गये हैं।

## सम्मेलन के कुछ मुख्य विषय

* संस्कारित परिवार-समाज निर्माण
* जनसंख्या का सामाजिक/वैचारिक असंतुलन-नये खतरे का संकेत
* आर्य गुरुकुलों की स्थिति पर चिंतन
* आर्य जाति का विभाजन-राजनीति का शिकार
* मानवनिर्माण का आधार
* मानव की आवश्यकता-अध्यात्म/योग
* विश्व स्तर पर असंतुलित लिंग अनुपात
* बदलते सामाजिक एवं नैतिक मूल्यमापन-समाधान क्या और कैसे?
* निरंतर बढता प्रदुषण-मानव जाति के लिए चुनौती-यज्ञ एवं सौर उर्जा सर्वोत्तम समाधान
* शिक्षा केवल रोजगार एवं मानव उन्नति का साधन
* बढती नशा प्रवृत्ति- जिम्मेदारी कानून की या समाज की
* अंधविश्वासों का बढता विश्वव्यापी व्यापार
* धार्मिक भ्रष्टाचार निरोधक कानून ही उपाय
* गोरक्षा, आयुर्वेद, धर्मान्तरण, तुष्टीकरण
* जातिभेद की बढती दीवारें, समाज संस्कृति व राष्ट्र के लिए घातक
* वर्णव्यवस्था - वास्तविक मनुवाद
* आर्यसमाज नये युग में प्रवेश- दृष्टि २०२४-२५
* सोशल नेटवर्क-बदलाव, सुधार या बिखराव
* मानव संबंध- न्यायालयीन आदेश/निर्देश स्वीकार्यता
* घर-घर पहुंचे-वेद सन्देश
* एकाकी सन्तान-विकास के लिए घातक
* दुषित अन्न- स्वास्थ्य का शत्रू
* आर्य समाज की भावी कार्यपद्धति व योजना
* हिन्दी व संस्कृत की वर्तमानस्थिति पर चिन्तन

**अतः आप सभी आर्य जनों से निवेदन है कि, आप सभी अधिकाधिक संख्या में इस आर्य महासम्मेलन में प्रधारकर अपनी संगठन शक्ति का परिचय दें।**

ooo

# समृद्धी के प्रतीक पातालदेश(अमेरिका) से एक पत्र

- आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
(अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी)

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा १९ से २२ जुलाई २०१८ तक अटलांटा के एक पंचसितारा होटल में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया था। जिसका उद्घाटन हिमाचलप्रदेश के महामहीम राज्यपाल डॉ.श्री देवव्रतजी ने किया। दो विभिन्न सत्रों में तीन विषयों पर हमें अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ। माता-पिता का संतान के निर्माण में योगदान, गृहदायित्त्व के साथ अध्यात्म का समन्वय, अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ आर्य समाज की भूमिका इन विषयों पर हमने उदाहरण सहित व्याख्यान दिये। वेदादि शास्त्रों के प्रमाण, ऐतिहासिक दृष्टान्त सहित प्रस्तुत किये। प्रथम मुख्य विषयपर लगभग १६ सुझाव रखे। प्रात:कालीन एक घंटे का ध्यान योग उपासना का प्रशिक्षण भी साधक जनों को देने का अवसर प्राप्त हुआ। अटलांटा के बाद न्यूयार्क के जमैका आर्यसमाज में २९ जुलाई को पुन: महामहीम राज्यपालजी से मिलना हुआ, तो होशंगाबाद गुरुकुल के दिसम्बर के वार्षिकोत्सव पर उन्हें पधारने का आमंत्रण दिया। अटलांटा, न्यूयार्क, न्यूजर्सी के अनेक परिवारों, आर्य समाजों में हमें यज्ञ, उपदेश, सैद्धान्तिक चर्चा, योगदर्शन के अध्यापन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सितासिनाटी नगर अटलांटा से ७२५ कि.मी. व शिकागो से ४६३ कि.मी.पर है। १० अगस्त को एक परिवार में यज्ञ करवाने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं से चर्चा कर वहाँ आर्य समाज की स्थापना कर दी। फिजिक्स के प्राध्यापक डॉ.अरुण नागपालजी को प्रधान, श्री रवि त्रिवेदीजी को मंत्री, इंजिनियर राघवेन्द्रजी को कोषाध्यक्ष व कुछ अन्यों को दायित्त्व सौंपकर शपथ ग्रहण करवाई। अमेरिका सभा के प्रधान श्री विश्रुत आर्यजी, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्यजी दिल्ली के श्री विनय आर्यजी से अधिकारियों की फोन पर चर्चा करवाई। सभी ने इस ऐतिहासिक कार्य हेतु सुखद आश्चर्य व्यक्त करते हुए हर संभव सहयोग की बात कही। अमेरिका के गणमान्य आर्यों को भी बाद में सूचना दी गई। सभी ने शुभकामनायें व्यक्त की । अमेरिका में ५० राज्य हैं। इस का क्षेत्रफल ९८३३५०० वर्ग कि.मी.है, जो भारत से लगभग तीन गुना बडा है, पर जनसंख्या भारत से एक

तिहाई ३२.५ करोड मात्र है। ६९% ईसाई, २४% नास्तिक, २% यहुदी, १% मुस्लिम, १% बौद्ध, १% हिन्दू, व १% अन्य पन्थ के हैं। मूलनिवासी १.२% मात्र बचे हैं। अंग्रेजों ने उन्हें समाप्त सा कर दिया है। पूरी दुनिया की ४०% संपत्ति का स्वामी अमेरिका है। पर विश्व की केवल ५% आबादी यहाँ रहती है । ब्रिटेन से सबसे पहले आजाद होकर ४ जुलाई १७७६ को इस देश की स्थापना हुई थी। १८ वी सदी के उत्तरार्ध में सेना का नेतृत्व करते हुए जनरल जार्ज वाशिंग्टन ने विद्रोह कर दिया था। १३ उपनिवेश ब्रिटेन से अलग हो गए। श्री वांशिगटन को राष्ट्रनिर्माता माना जाता है। उस क्रांति को ही स्वतन्त्रता संग्राम कहते हैं।

देश की विशालता व विविधता के कारण अलग-अलग चार क्षेत्रों में चार पृथक्-पृथक् समय यहाँ की घडियों मे देखा जाता है। जिसका सर्वाधिक अन्तर तीन घंटे का है। अमेरिका में मकानादि पर टैक्स बहुत ज्यादा देनी होती है, पर सरकार प्रजा के लिए इतना उत्तम प्रबन्ध करती है कि किसी को कोई शिकायत नहीं रह पाती। हाईस्कूल तक नि:शुल्क शिक्षा, चिकित्सा की उत्तम व्यवस्था, पूरे देश में स्वास्थ्य व सौन्दर्यवर्धक हरियाला, सुरक्षार्थ अनेक प्रकार की पुलिस, प्रत्येक कार्यालय में कर्तव्यपारायण कर्मचारी, उत्तम मानक स्तर की बहुत चौडी सडकें, सैकडों पर्यटक व दर्शनीय स्थल, बच्चों को आकृष्ट करते स्कूल, लायब्रेरी सहित अनेक व्यवस्थायें भारत सहित विश्व के अनेकों देशों के नागरिकों को जैसे बाँध सा लेती है। कोई वापुस अपने देश जाना नहीं चाहते हैं। पूरे देश में ट्रेन व बस वातानुकुलित ही होती है व यात्रा महंगी है, पर जनसामान्य वायुयान की यात्रा ज्यादा करता है। विश्व के ४४००० एयरपोर्ट में से १५०९५ एयरपोर्ट केवल अमेरिका में है। बच्चे १८ वर्ष के बाद स्वावलंबी हो जाते है। अत: स्वच्छन्दता व स्वतन्त्रता ज्यादा है। अंत में शिकागो आर्यसमाज में १२ अगस्त को हमारा एक आध्यात्मिक विषय पर व्याख्यान हुआ, जिसका फेसबुक पर सीधा प्रसारण हुआ था। लगभग ४८ दिनों तक की हमारी यह बारहवी विदेशयात्रा ईश्वर कृपा से सफल हुई। CNN सेंटर, कोकाकोला म्यूजियम, डिज्नीलैंड, एयरफोर्स म्यूजियम, नियाग्रा प्रपात, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर आदि सैंकडो स्थल हैं, जिनको देखने लाखों पर्यटक अमेरिका आते हैं।

**मो.९४२५४९५२४६**

**सूचना:- 'वैदिक गर्जना' मासिक पत्रिका आजीवन सदस्य को समयानुसार भेजी जाती है। विद्वानों व आर्य संस्थाओं को नि:शुल्क प्रेषित करते हैं। न मिलने पर कृपया पत्रद्वारा सूचित करें!-व्यवस्थापक**

# ठा.विक्रमसिंहजी के अमृतमहोत्सव पर विद्धद्गौरव

## ७५ वे जन्मदिवस पर ७५ विद्वानों का सम्मान

आर्यजगत् के दानवीर भामाशाह तथा समाजसेवी आर्य व्यक्तित्त्व श्री ठाकुर विक्रमसिंहजी का अमृतमहोत्सव आर्य विद्वद्गौरव समारोह के रूप में मनाया गया। इस उपलक्ष्य में दि.१९ सितम्बर को दिल्ली के इण्डिया हैविटेड सेन्टर में आयोजित समारोह में आर्य जगत् के ७५ विद्वानों, लेखकों, संन्यासियों, प्रचारकों तथा समर्पित कार्यकर्त्ताओं को दानराशियां प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल समिति के प्रमुख श्री स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती ने की। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ.सुब्रह्मण्यम स्वामी प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह में आर्यजगत् के विद्वान मनीषी सर्वश्री डॉ.ज्वलन्तकुमार शास्त्री, डॉ.प्रशस्यमित्रजी शास्त्री, डॉ.वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय, आचार्य डॉ.सूर्यादेवी, आचार्या डॉ.प्रियम्वदा वेदभारती, डॉ.नन्दिता शास्त्री, आचार्या सविता आर्या, डॉ.धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री तथा गुरुकुल के आचार्य-आचार्याओं, विद्वानों, तपस्वी सन्यासियों, भजनोपदेशकों को ताम्रपत्र, शॉल आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मंचपर प्रो.वेदप्रकाशजी शास्त्री, आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश, डॉ.वेदप्रकाशजी वैदिक, आचार्य सत्यजितजी, गौरवमूर्ति श्री ठाकुर विक्रमसिंहजी आसीन थे। संचालन डॉ.धर्मन्द्रजी शास्त्री ने किया।

### महाराष्ट्र के तपस्वियों का सम्मान

इस समारोह में अनेकों छात्रों के नवनिर्माण हेतु जीवन समर्पित करनेवाले १०१ वर्षीय तपस्वी संन्यासी पू.श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती एवं कर्मठ व कुशल आर्यसंगठक तथा राज्य में प्रान्तीय सभा को सुसंगठित करने व आर्य समाज की विचारधारा जन-जन तक पहुंचाने अग्रणी भूमिका निभानेवाले डॉ.ब्रह्ममुनिजी को भी सम्मानित किया गया। तथा नागपुर के आर्य भजनोपदेशक पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य का भी सम्मान हुआ। स्वास्थ्य ठिक न होने के कारण श्री स्वामीजी एवं श्री मुनिजी समारोह में पहुंच न पाये। इनका सम्मान श्री सुरेन्द्रपालजीने ग्रहण किया।

# १६, १७, १८ नवम्बर को अजमेर में ऋषिमेला

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १३५ वें बलिदान समारोह के उपलक्ष्य में परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में आगामी दि.१६, १७, १८ नवम्बर २०१८ को भव्य रूप में ऋषिमेले का आयोजन किया गया है। इस अवसर ऋग्वेद पारायण यज्ञ, राष्ट्रीय संगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता, वैदिक विद्वानों, विदुषियों एवं आर्य कार्यकर्त्ताओं का सम्मान तथा विभिन्न विषयों पर सम्मेलन आदि कार्यक्रम होंगें।

इस ऋषिमेले पर आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान, लेखक, आचार्य, संन्यासी, वानप्रस्थी, मनीषी, चिन्तक, आर्यनेता भारी संख्या में पधार रहे हैं। इन आमन्त्रित विद्वानों में प्रो.राजेन्द्रजी 'जिज्ञासु', आचार्य विजयपालजी, सार्वदेशिक के प्रधान सुरेशजी अग्रवाल, मन्त्री एड.प्रकाशजी आर्य, डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार, स्वामी ऋतस्पतिजी, सज्जनसिंहजी कोठारी, डॉ.राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ.वेदपालजी, आचार्य सूर्यादेवी, डॉ.प्रशस्यमित्रजी शास्त्री, डॉ.विनय विद्यालंकार, आचार्या प्रियावदा वेदभारती, डॉ.तपेन्द्रजी विद्यालंकार, ठाकूर विक्रमसिंहजी, डॉ.ब्रह्ममुनिजी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं.सत्यपालजी 'पथिक' आदियों का समावेश है।

अत: इस समारोह में पधारने तथा आर्थिक सहयोग देने का आवाहन परोपकारिणी सभा के संरक्षक गजानन्द आर्य, का.प्रधान डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी, मन्त्री श्री ओममुनिजी ने किया है।

# १०, ११ नवम्बर को कान्हा गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

नागपुर(महाराष्ट्र) के समीपस्थ रुईखैरी परिसर में गत तीन वर्षों से वेद व्याकरण, संस्कृत आदि के अध्ययन-अध्यापन में संलग्न 'कान्हा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय' का वार्षिकोत्सव दि.१० व ११ नवम्बर २०१८ को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसरपर आमन्त्रित विद्वानों के ओजस्वी प्रवचन, भजनोपदेशकों की मधुरभजन प्रस्तुति के साथ ही ब्रह्मचारियों के शारीरिक व्यायाम, योगासन प्रदर्शन एवं बौद्धिक ज्ञान प्रदर्शनी भी प्रस्तुत होगी। इसी पावन अवसर पर जिनके नाम से यह गुरुकुल क्रियान्वित हैं, ऐसे दिवंगत कर्मठ आर्यसेवी स्व.कान्हुजी केरबाजी तासके की पुण्यस्मृति में समस्त तासके परिवार की ओर से नवनिर्मित 'विद्यालय भवन' का उद्घाटन भी होगा।

वार्षिकोत्सव समारोह में आर्यजगत् के क्रान्तिकारी वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री आर्यनरेशजी (उद्गीथ साधना स्थली, आबु

पर्वत) व्याख्याता के रूप में तथा पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य(नागपुर) भजनोपदेशक के रूप में, प्रो.डॉ.अखिलेशजी शर्मा(धुले) यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में पधार रहे हैं। साथ ही स्वामी ऋतस्पतिजी(गुरुकुल, होशंगाबाद), प्रो.डॉ.नरेन्द्रजी शास्त्री(उदगीर) एवं अन्य स्थानीय नेता व कार्यकर्त्ता भी इसमें सम्मिलित होंगे। अतः आर्यजनों व गुरुकुलप्रेमियों को इस उत्सव में पधारने का आवाहन गुरुकुल के आचार्य श्री धर्मवीरजी एवं गुरुकुल संचालन समिति के सदस्य व तासके परिवार ने किया.है।

* * *

आर्य समाज परली-वै. अंतर्गत

## स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम

**-० आप भी सहाय्यक बनें ०-**

कृपया गुरुकुल प्रेमी माता-बहनों व सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि, वेद, व्याकरण, संस्कृत के अध्ययन व अध्यापन तथा आदर्श मानव निर्माण की दृष्टि से आर्य समाज परली द्वारा शहर से ३ कि.मी.दूरी पर आप सभी का प्यारा गुरुकुल **'स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम'** इस समय प्रगतिपथ पर हैं। पर्वतीय प्राकृतिक सौंदर्य एवं रम्य वातावरण में छोटे-छोटे २० ब्रह्मचारी आचार्य, अध्यापकों के चरणों में बैठकर ज्ञान ग्रहण एवं सुसंस्कारों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दानदाता सज्जन दिल खोलकर पवित्र भाव से दान दे रहे हैं। शासन से किसी प्रकार का अनुदान न लेते हुए सारा खर्चा आर्य समाज परली के पदाधिकारी एवं अन्य सहयोगियों द्वारा गुरुकुल का संचालन हो रहा हैं। बढते खर्चे को देखते हुए गुरुकुल सेवा समिति द्वारा सभी दान-दाताओं को आर्थिक सहयोग के लिए अपील की जा रही है। बहुत सारे सज्जन एवं दानी आर्य कार्यकर्त्ता प्रतिमाह रू.१००० देने के लिए कृतसंकल्पित हो चुके हैं। कृपया आप भी अपनी पवित्र दानराशियाँ (रू.१०००, रू.५०००, रू.११०००) इस गुरुकुल के लिए निम्नलिखित बैंक खाते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

**खाता धारक का नाम - मंत्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ**
**बैंक का नाम-भारतीय स्टेट बैंक, मोंढा मार्केट, परली-वै. जि.बीड**
**बैंक खाता क्र.11154152876, IFSC Code SBIN0003406**

***

-० शोक समाचार ०-

# भीमरावजी मेदक्कर का देहावसान

निजामाबाद(तेलंगणा) स्थित आर्य समाज के निष्ठावान् कार्यकर्त्ता एवं शिक्षासेवी व्यक्तित्त्व श्री भीमरावजी गोपालराव मेदक्कर का ८६वें वर्ष की आयु में दि.२६ अगस्त २०१८ को प्रात:काल अल्पकालीन बीमारी से निधन हो गया। वे अपने पश्चात् पत्नी विमलदेवी, पुत्र प्रदीप, पुत्रवधू, कन्या सौ.प्रभा एवं दामाद श्री चन्द्रकान्त बारसकर तथा पौत्रादि परिवार छोडकर संसार से विदा हुए।

जीवनभर एक छात्रप्रिय अध्यापक के रूप में वे निष्ठापूर्वक विद्यादान करते रहे। साथ ही सेवा, सहाय्यता, परोपकार आदि सद्गुणों को अपनाते हुए उन्होंने सामाजिक कार्य में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। शहर के सरस्वतीनगर प्रभाग के पार्षद के रूप में उन्होंने कार्य किया व नागरिकों की उन्होंने प्रामाणिकता से सेवा की। पिता के निधन के पश्चात् परिवार की सारी जिम्मेदारियां उन्होंने अपने कन्धों पर ली। माता की सेवा, बहनों का आतिथ्य, सम्मान, रिश्तेदारों का स्नेहादर, कर्तव्यनिर्वहन उन्होंने बडी लगन से किया।

स्थानीक आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता बनकर समय-समय पर इस संस्था को पुण्यदान व सहयोग करते रहे। सौम्य, सरल, मृत्यू, शान्त व धर्मपरायण सद्वृत्ति के धनी श्री भीमरावजी के निधन परिवार के साथ ही सामाजिक क्षेत्र की भी क्षति हुई है। स्व.श्री मेदक्करजी के पार्थिव पर सायंकाल वैदिक विद्वानों, पण्डितों, आर्य कार्यकर्ताओं तथा नगर के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये।

# धुलिया के प्रधान श्री भगतजी नहीं रहे

आर्य समाज धुलिया(धुले) के प्रधान श्री कृष्णलालजी घन:श्यामलालजी भगत का दि.४ सितम्बर २०१८ को दोपहर १.३० बजे दु:खद निधन हुआ। वे ८६ वर्ष के थे। उनके पश्चात् दो पुत्र, चार कन्याएं, पुत्रवधुएं तथा दामाद एवं पोते-पोतियां व दोहते-दोहतियां विद्यमान हैं।

श्री भगतजी वैदिक सिद्धान्तों पर चलनेवाले आर्यसमाज के सच्चे अनुयायी थे। बचपन से ही वे आर्य संस्कारों में पलें। इनके पूर्वज स्वतन्त्रता से पूर्व पाकिस्तान प्रान्त में निवास करते थे। पिताजी ने आर्य समाज संजरपुर (पाक.) के प्रधानपद को विभूषित किया था। उस जमाने में इन्होंने आर्य समाज की प्रेरणा से वहां पर बालिकाओं के लिए कन्या पाठशाला

खोली थी। विभाजन के पश्चात् बहावलपुरी समाज महाराष्ट्र के धुलें में आ बसा। यहां पर आने के बाद आर्य समाज का प्रचार कार्य निरन्तर जारी रहा।

श्री भगतजी स्थानीय आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता व प्रतिष्ठित नागरिक मानें जाते थे। धुलिया कुमारनगर सोशल वेल्फेर सेन्टर इस सामाजिक व शैक्षिक संस्था द्वारा संचालित 'माध्यमिक व प्राथमिक विद्यालय' के अध्यक्षपद पर आप बनें रहें। साथ ही बहावलपुरी समाजमण्डल के प्रमुख पद को आपने संभाला।

भगत मेडिकल स्टोअर्स के मालिक के रूप में नगर में आपकी विशेष पहचान थी। आर्य समाज कुमारनगर संरक्षक के पद से लेकर सामान्य आर्य कायकर्त्ता की भूमिका भी आपने अपने बडी श्रद्धा, लगन व निष्ठा के साथ निभाई। विशेषकर संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय में आपकी विशेष रूचि थी। मृत्यु से पूर्वही आपने आर्य समाज के श्रावणी पर्व पर आयोजित यज्ञ मे यजमान बनकर आहुतियां प्रदान की थी।

ऐसे महर्षि दयानन्द के कर्मनिष्ठ अनुयायी की मृत्यु से आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। सायंकाल ५ बजे उनके मृत शरीर पर पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये। श्रावणी उत्सव पर उत्तरप्रदेश से पधारे वैदिक विद्वान् आचार्य ओमव्रतजी एवं प्रो.डॉ.अखिलशेजी शर्माने यह दाहकर्म कराया।

## बाबुरावजी तेरकर का निधन

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्रामकालीन प्रसिद्ध आर्य समाज, गान्धी चौक लातूर के वरिष्ठ सदस्य एवं शहर के सुपरिचित कपडा व्यापारी श्री बाबुरावजी नारायणराव तेरकर का पिछले माह वृद्धापकालीन रुग्णावस्था के कारण निधन हुआ। वे ८९ वर्ष के थे। श्री तेरकरजी को ३ पुत्र एवं १ कन्या थी, जिनमें से दो पुत्रों का कुछ वर्षों पूर्व देहावसान हुआ है। आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के पुरानी पीढी के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में उनकी पहचान थी। घर-घर जाकर पारिवारिक सत्संग के माध्यम से वे यज्ञीय संस्कृती का प्रचार करते थे। तन्मयता से भजन गाकर वातावरण को भक्तिमय बनाने में प्रयत्नशील रहे। नित्यप्रति वे योगासन, प्राणायाम व ध्यान करते थे। आर्यसमाज के नियोजन तथा संवर्धन में श्री तेरकरजी काफी योगदान रहा है। उनके पार्थिव शरीर पर पं.चन्द्रेश्वर शास्त्री के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक रीति अन्तिम संस्कार किये गये। तीसरे दिन घरपर शान्तियज्ञ भी सम्पन्न हुआ। इस अवसरपर आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने श्रद्धासुमन समर्पित किये।

**दिवंगत आत्माओं की सद्गति व शान्ति हेतु कामनायें तथा उन्हें भावपूर्ण श्रद्धान्जलियाँ!**

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

# मराठी विभाग

## उपनिषद संदेश | परमेश्वराचा साक्षात्कार एखाद्यालाच!

**परांचि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात् पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्।**
**कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षतावृत्तचक्षरमृतत्वमिच्छन् ॥**

उत्पत्ती व विनाशरहित अशा परमेश्वराने इंद्रियांना बहिर्मुख म्हणजे शब्द, रूप, रसादी बाह्य विषयांकडे जाणारे विशेष रूपाने बनविले आहे. म्हणून मानव हा आपल्या इंद्रियांद्वारे या बाह्य विषयांना पाहतो(जाणतो), पण तो अन्तरात्म्याला (परमात्म्याला) मात्र जाणत नाही. कोणी तरी एखादाच धीर, विवेकशील व अभ्यासू माणूस चक्षू व इतर इंद्रियांना झाकून(बाह्य विषयांपासून वेगळे करून) मोक्षपद मिळविण्याची इच्छा करीत प्रत्येक जीवाच्या अंत:करणात व्याप्त परमेश्वराचा साक्षात्कार करतो. (त्याला जाणू शकतो.) **(कठोपनिषद–४/१)**

## दयानंद वाणी | मूर्तिपूजा व तीर्थयात्रा सनातन नाही...

जी गोष्ट अनादी काळापासून चालत आलेली असते, तिला 'सनातन' असे म्हणतात. जर मूर्तिपूजा व तीर्थयात्रा या गोष्टी सनातन असत्या तर वेदांमध्ये आणि ब्राह्मण वगैरे ऋषिमुनिकृत ग्रंथांमध्ये त्यांचा उल्लेख आला असता की नाही? तसा तो आढळत नाही. याचे कारण काय? याचे कारण असे की, मूर्तिपूजा ही अडीच–तीन हजार वर्षांपूर्वी वाममार्गी व जैन लोकांनी सुरु केली आहे. त्याआधी ती आर्यावर्त्तामध्ये अस्तित्वात नव्हती. त्यावेळी ही तीर्थक्षेत्रेही नव्हती. जेंव्हा जैनांनी गिरनार, पालिताणा, सम्मेतशिखर, शत्रुंजय, आबू वगैरे तीर्थक्षेत्रे निर्माण केली, तेंव्हा पुराणिकांनीही त्यांच्यासारखीच आपलीही तीर्थक्षेत्रे तयार केली. या बाबतीत कोणाला खात्री करून घ्यावयाची असल्यास त्याने पंड्याकडे असलेल्या जुन्या वह्या, ताम्रपट वगैरे पाहावेत. त्यावरून लक्षात येईल की, ही सारी तीर्थक्षेत्रे गेल्या हजार–पाचशे वर्षांच्या आतलीच आहेत. एक हजार वर्षांहून अधिक जुनी नोंद कोणाजवळही नाही. यावरून ही तीर्थक्षेत्रे आधुनिक असल्याचे सिद्ध होते.

# प्रखर सत्यवादी व विज्ञाननिष्ठ म.दयानंद!

**-माधव देशपांडे**(पूर्वमंत्री, म.आ.प्र.सभा)

झाडावरून जमीनीवर पडणारे फळ तर अनेकजण पाहतात. पण सफरचंदाच्या झाडावरून पडलेले फळ न्यूटनने पाहिले. त्याने चिंतन, मनन केले व गुरुत्वाकर्षणाचा सिद्धान्त जगापुढे मांडला. अशाच प्रकारचे एक दृश्य बाल मूलशंकराने पाहिले, विचार केला, चिंतन केले, निश्चय केला व जगापुढे सिद्धांत मांडला की जड वस्तू ही कधीही चेतन ईश्वर होऊ शकत नाही. सत्याचा शोध हेच त्यांच्या जीवनाचे ध्येय बनले. एका पुरुषार्थी वैज्ञानिकाचे काय हेच ध्येय नसते काय? सत्याचा शोध! याच शोधाचा परिपाक म्हणजे त्यांनी लिहिलेला 'सत्यार्थ प्रकाश' हा ग्रंथ होय. या ग्रंथाच्या भूमिकेत स्वामीजी म्हणतात – 'हे पुस्तक लिहिण्यामागचा माझा एकमेव उद्देश्य म्हणजे सत्य-असत्याचा प्रकाश करणे, अर्थात् जे सत्य आहे, त्याला सत्य आणि जे मिथ्या आहे, त्यास मिथ्या प्रतिपादित करणे! सत्य-अर्थांचाच प्रकाश करणे!' ते पुढे लिहितात- 'जो पदार्थ जसा आहे, तसाच सांगणे, लिहिणे व मान्य करणे यालाच मी सत्य मानतो.'

याच सत्याच्या प्रतिष्ठेसाठी सॉक्रेटिसला विष प्राशन करावे लागले. हाच प्रसंग गॅलेलिओवर आला, ब्रुनोला ही जीवनदान द्यावे लागले. तेच स्वामी दयानंद सरस्वतींना सुद्धा आपल्या जीवनात सहन करावे लागले. यांनाही बलिदान द्यावे लागले. जेंव्हा अनेकांच्या अंधश्रद्धेला धक्का बसू लागला, तेंव्हा कट्टरपंथी लोकांनी त्यांना त्रास देण्यास सुरुवात केली. स्वामीजींचा हाच उद्देश की मतमतांतरांच्या विश्वासावर पक्षपात न करता यथातथ्य सत्य सांगणे. अगदी अलीकडे पुण्यात याच परंपरेत अंधश्रद्धांवर प्रहार करणाऱ्या डॉ.नरेंद्र दोभाळकरांनाही जीवनदान द्यावे लागले. विषाचा प्यांला सॉक्रेटिसला प्यावा लागला. गॅलेलिओला पकडून जेलमध्ये टाकले गेले. का? कारण त्यांनी सांगितले होते की, पृथ्वीच सूर्याभोवती फिरते, सूर्य नव्हे!

शेवटी विज्ञानाचे ध्येय काय आहे? वैज्ञानिक दृष्टिकोण म्हणजे काय? वैज्ञानिकांचे प्रयत्न कशासाठी चालू आहेत? सत्याचा शोध! यांची मर्यादा कोणती आहे? सत्याशिवाय कोणत्याही मनघडन्त गोष्टींना न मानणे. मग ती कोणीही सांगो. पिता असो, गुरु असो, सत्ताधीश असो, मठाधीश असो, धर्मगुरु असो, संप्रदायप्रमुख असो, कोणीही असोत! सत्यावाचून अन्य कांहीही मान्य न करणे हेच वैज्ञानिकांचे कर्तव्य होय. केवळ प्रयोगशाळेत प्रयोग करणारा, विज्ञान विभागात पीएच.डी. प्राप्त करणारा

वैज्ञानिक नव्हे. खऱ्या वैज्ञानिकांचे दोन ध्येय असतात. एक सत्याचा शोध व जे कांही सत्याच्या आधारे ज्ञान प्राप्त होईल ते न डगमगता सांगणे आणि दुसरे म्हणजे असत्याशी कोणत्याही प्रलोभनाचा स्वीकार न करता सत्य सांगणे, वागणे व मान्य करणे. आज विज्ञानाचे युग आहे असे आपण अनेक वेळा म्हणतो, पण वैज्ञानिक दृष्टिकोण बाळगत नाही. व्यवहारात आणत नाही. परंपरेच्या गर्तेत स्वत:ला झोकून देऊन अंधश्रद्धेचा नकळत आश्रय घेतो.

अशा अंधविश्वासी लोकांमध्ये आपणांस उत्तमातील उत्तम वकील भेटतील, ज्यांना की आश्चर्यकारक अशी तर्कबुद्धी प्राप्त झालेली आहे. चतुर राजनितीज्ञ असतील, जे की साऱ्या विश्वातील राजनैतिक क्षेत्रात कार्यरत अदृश्य शक्तीला सहजरीत्या ओळखतात. विशेष करून यांची बुद्धी निवडणुकीच्या काळात तीव्र झालेली दिसून येते. तर्कशास्त्राचे प्रसिद्ध प्राध्यापक भेटतील, जे की सूक्ष्मातिसूक्ष्म हेत्वाभास समजण्यात कुशल आहेत. व्यापाराच्या क्षेत्रातील कुशल व्यापारी सुद्धा भेटतील की त्यांच्या नजरेतून जगातील कोणत्याही क्षेत्रातील बाजाराचा कोपरा सुद्धा सुटणे शक्य नाही. प्रसिद्ध अर्थशास्त्रज्ञ भेटतील, जे की शोषक वर्गाच्या प्रत्येक हालचालींचा सफलतापूर्वक प्रतिकार करू शकतात. आपणांस प्रसिद्ध ज्योतिषविशारद भेटतील, ज्यांचे पाय पृथ्वी गृहावर स्थिरावले आहेत, (पण या गृहांचा किंचितही विचार न करता) त्यांना अतिदूर अशा आकाशातील ग्रह उपग्रहांचे आपल्या स्वत:च्या गृहापेक्षा अधिक ज्ञान आहे! उत्तम गणितज्ञ भेटतील, जे की गणितातील सूक्ष्म तत्त्वावर अधिकार गाजवतात. हे सर्व बुद्धीजीवी आहेत. ज्यांना की आपण विविध मंदिरांमध्ये, पीर-दर्ग्यामध्ये, चर्चमध्ये अल्पबुध्दी लोकांबरोबरच त्याच भक्ति भावनेने थोडेसे धन देऊन हजारो पटीने मिळविण्याची इच्छा बाळगतांना पाहतो व अनुभवतो. जड पदार्थांपासून मनोकामनांची पूर्तता होण्यासाठी उपासतापास करतील पण! हे सर्व सत्याच्या कसोटीवर कोणत्याही कार्य-कारण तथ्यास घासून पाहण्यास तयार नाहीत. वैज्ञानिक दृष्टिकोनातून ते सत्याचा शोध घेऊ इच्छित नाहीत. ते सत्याचा प्रकाश प्राप्त करु इच्छित नाहीत. काय हे असे होणे शक्य आहे काय? यावर ते काय विचार करू शकत नाहीत? काय हे कारण असेल? त्यांना ही भीती वाटत असेल की या बौद्धिक चर्चेमुळे त्यांचा ईश्वरावरील अंधविश्वास उडेल म्हणून? महर्षी दयानंदांनी मात्र आयुष्यात कधीही असत्याशी तडजोड केली नाही. जीवनात अनेक प्रलोभने व संकटे आली. जीवावर बेतले, पण त्यांनी सत्याची कास सोडली

नाही.राजाने व मठाधीशाने त्यांना प्रलोभने दिली व विनंती केली की, मूर्तीपूजेचे खंडन करू नका. त्यांनी राजाला उत्तर दिले, ''सत्याच्या शोधासाठी मी आपली धन संपत्ती सोडून आलो. तुमचे राज्य कितीसे मोठे आहे? एका दमात मी तुमच्या राज्याबाहेर जाऊ शकतो. पण सत्याचा त्याग करून त्या परमेश्वराच्या राज्याबाहेर जाऊ शकत नाही.''

स्वामी दयानंद हे विद्याप्राप्त करून जेंव्हा गुरुच्या कुटीबाहेर पडले, तेंव्हा त्यांनी समाजातील अंधश्रद्धेविरुद्ध आघात करण्यास प्रारंभ केला. ते सुद्धा वैज्ञानिक पद्धतीनेच! स्वामी दयानंद जितके आधुनिक होते, तितकेच ते प्राचीन भारतीय वेदविद्येचे पुरस्कर्ते होते. त्यांनी घोषणा केली की, 'वेदों की ओर लौटो!' त्याच बरोबर आधुनिक पाश्चात्य विज्ञानाचा अभ्यास करण्यासाठी पं.श्यामजी कृष्ण वर्मा यांना इंग्लंडला जाण्यास प्रेरणा दिली. त्यावेळी जन–मानसात परदेशगमन निषिद्ध मानले जात होते. गेल्या हजारो वर्षात भारतात अनेक विद्वान होऊन गेले. वेदज्ञ पंडित झाले. वेदपाठ करणारे व वेदभाष्य करणारे विद्वान होऊन गेले! महामंडलेश्वर अनेक झाले. जगद्गुरु अनेक झाले, परंतु कुणीही असे प्रतिपादन केले नाही की– ''वेद सत्य विद्यांचे मूळ ग्रंथ आहेत!'' सर्वजण प्राचीन आर्ष सिद्धान्त व त्रैतवाद विसरून गेले होते. स्वामीजींनी मात्र मूर्ती (जड) पूजा व अंधविश्वासाच्या मुळावरच घात घातला. त्यावेळी पौराणिकांचे मजबूत गड म्हणून समजल्या जाणाऱ्या काशी क्षेत्रावरच त्यांनी इ.स.१८६९ मध्ये चढाई केली व सर्व पंडित, ब्राह्मणवर्गास आव्हान दिले की ''दाखवा! मूर्तीपूजेच्या समर्थनार्थ वेदांमधील एक तरी मंत्र दाखवा!'' पाच हजार वर्षानंतर एका ऋषीने काशी/ वाराणसी वर ही क्रांतिकारी चढाई केली होती. स्वत:हून सिंहाच्या गुहेत प्रवेश केला होता. या घटनेस इतिहासात तोड नाही. एकीकडे एकटे दयानंद तर दुसरीकडे शे–दीडशे विद्वान पंडित! अनेक पोपलीलांवर, अंधश्रद्धेवर हल्ला चढविला. एका खऱ्या वैज्ञानिकाच्या भूमिकेतून, आप–परभाव सोडून त्यांनी हे मोठे बंड केले हाते.

त्यांचा वैज्ञानिक दृष्टिकोन विस्ताराने अभ्यासण्याची गरज आहे. इंग्रजी भाषेपासून व साहित्यापासून दूरच होते. जगातील कोणत्याही प्रयोगशाळेत ते शिकले नाहीत की कोणत्याही वैज्ञानिक गुरुंपासून प्रशिक्षण घेतले नाही.कोणत्याही प्रयोगशाळेत संशोधन(Research) सुद्धा केले नाही. परंतू ते गॅलॅलिओ, न्यूटन, कोपर्निकस, आईन्स्टाईन यांच्या तुलनेत ते यत्कींचितही कमी दिसत नाहीत. वैज्ञानिक निर्भयपणा स्वामी दयांनदांमध्ये पूर्णपणे दिसून येतो. असे पूर्णत्व गॅलेलिओमध्ये कदापी दिसत

नाही. इ.स.१८७५ साली पुण्यातील व्याख्यानात विमान विद्येविषयी मार्गदर्शन करतात, तर तार विद्या व खगोल शास्त्रातील सिद्धांत यांवर ही ते माहिती देतात. सृष्टी उत्पत्तीचे गूढ गुपित सुद्धा विस्ताराने सांगतात. आजपर्यंतचे सृष्टीचे आयुष्य देखील ते कथन करतात. पृथ्वीवरील प्रथम मानव उत्पत्तीचे स्थान 'तिबेट' असल्याचे ते ठासून प्रतिपादन करतात. मानवाची उत्पत्ती माता-पित्यांविना युवा अवस्थेत अनेक संख्येने झाल्याचे ते सांगतात. 'प्रथम बीज की वृक्ष' या गूढ प्रश्नाचे उत्तर फक्त दयानंदच देतात. आकाशाचा रंग निळा का? याचे ते वैज्ञानिक उत्तर देतात. आईन्स्टाईनचा सिद्धांत स्वामीजी त्यांच्या ३०-३५ वर्षाअगोदरच जगापुढे मांडतात. खरोखरच हे आश्चर्यकारक आहे. त्यांच्या विलक्षण बुद्धीवर सामान्यांचा विश्वास बसणे कठीण आहे. गरज आहे ती त्यांच्या सिद्धांताचा बारकाईने अभ्यास करण्याची. हे सर्व त्यांच्या साहित्यातून आपणांस दिसून येते.

उदाहरणादाखल आपण फक्त आईन्स्टाईनच्या सिद्धांताविषयीचे त्यांचे वक्तव्य पाहू. ह्या विषयी त्यांनी आपल्या 'सत्यार्थ प्रकाश' मध्ये लिहिले आहे. ऋग्वेदातील एका मंत्राचा (१०/२७/३) अर्थ करतांना ते विद्युत, काल आणि गतिविषयी सांगतात. ''व्यापक परमेश्वर प्रलय काल में जगत् को निगल जाता है और कार्य को कारण रूप में ग्रहण करता है। हे मनुष्यो! जितना स्थूल वस्तुमात्र(Mass) संसार में है, उतना समस्त बिजुली के (E) बिना नही। उसको प्रयत्न से तुम लो जानो।'' हे विचार स्वामीजींनी १८७५ साली मांडले तर आईन्स्टाईनने $E=mc^2$ हा सिद्धांत नंतर इ.स.१९१० मध्ये मांडला.

दयानंदांनी इतका श्रेष्ठ, व्यापक व वैज्ञानिक विचार कसा काय केला? त्यावेळी त्यांच्याकडे साधनांची अत्यंत कमतरता होती, पण विचारांत मात्र विलक्षणता होती. दयानंदांवर जर आपण प्रेम करत असू तर याचा अर्थ असा होतो की, आम्हांस त्यांच्या सत्य सिद्धांतावर, विज्ञानावर, बौद्धिकतेवर, बुद्धी प्रामाण्यावर, त्यांच्या चेतन ईश्वरावर, वेदांवर प्रेम आहे. मं.दयानंदांवरचा आमचा हा प्रेम श्रद्धाभाव चिरकालापर्यंत टिकवून ठेवावयाचा असेल तर त्यांचे विज्ञाननिष्ठ सत्य वैदिक सिद्धांत जीवनात आचरणात आणावयास हवेत. त्यांच्या तत्त्वज्ञानाचा पूर्णपणे अंगिकार करणे म्हणजे आर्यत्व जीवंत ठेवणे होय जगाला विशुद्ध वैज्ञानिक व अध्यात्मिक दृष्टिकोन प्रदान करणाऱ्या या थोर महात्म्यास आमचे त्रिवार वंदन...!

***

- मो.९८२२२९५५४५

अशी झाली श्रावणी...!

# महाराष्ट्रात दरवळला वेदज्ञानाचा परिमळ

- लक्ष्मण आर्य गुरुजी/पं.सुधाकर शास्त्री

वेदप्रतिपादित मानवीय मूल्य आणि तत्वज्ञानाचा सर्वदूर प्रसार व्हावा व वेदांची विशुद्ध अशी कल्याणकारी विचारसरणी सामान्य जनतेपर्यंत पोहोचावी, या पवित्र उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे दरवर्षीप्रमाणे आयोजित केला जाणारा राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार उपक्रम याही वर्षी अतिशय प्रभावीपणे यशस्वी ठरला. राज्यातील ठिकठिकाणच्या एकंदरीत १३२ पेक्षा अधिक आर्य समाजांमध्ये विविध विद्वान व भजनिकांमार्फत यावर्षी दि.१२ ऑगस्ट ते ९ सप्टेंबर दरम्यान हा वेद प्रचार अतिशय उत्साहात संपन्न झाला.

या श्रावणी वेदप्रचाराकरिता उ.प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली या राज्यातून १२ विद्वान व भजनोपदेशकांना आमंत्रित करण्यात आले होते. तर राज्यातील जवळपास ४० विद्वानांनी यांत सहभाग नोंदविला.

गाजियाबाद (उ.प्र.) येथून आलेले वैदिक विद्वान प्रो.चंद्रपालजी शास्त्री व टोकस (हरियाणा) येथून आमंत्रित आर्य भजनोपदेशक पं.रामकुमारजी आर्य यांनी औरंगाबादचे दोन्ही आर्य समाज, सेलू, परळी, लातूर(गांधी चौक) व सोलापुर येथील आर्य समाजांमध्ये अतिशय उत्कृष्टपणे प्रचार केला. त्यांनी विविध विषयांवर मौलिक व्याख्याने दिली आणि वैदिक सिद्धांत हे जागतिक समस्यांवर प्रभावी उपाय असल्याचे सांगितले. त्यांची शाळा व महाविद्यालयांमध्ये देखील व्याख्याने पार पडली. प्रो.चंद्रपालजी शास्त्री यांनी परळी येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयात व लातूर येथील शाहु महाविद्यालयात आयोजित संस्कृतदिन समारंभातही प्रमुख पाहुणे म्हणून मार्गदर्शन केले. तसेच विविध ठिकाणच्या पारिवारिक सत्संगात देखील प्रबोधन केले.

हाथरस (उ.प्र.) येथील मूळनिवासी व सध्या गाजियाबाद येथे कार्यरत कर्मठ वैदिक विद्वान व ऋषिभक्त पं.ब्रिजेशजी शास्त्री दरवर्षी मोठ्या श्रद्धेने महाराष्ट्राच्या श्रावणीसाठी वेळ देतात. त्याचबरोबर ते उत्तरभारतातील विद्वान व भजनोपदेशकांना महाराष्ट्रात प्रचारासाठी पाठवितात. गेल्या १० वर्षांपासून श्री शास्त्रीजी निस्पृह भावनेने श्रावण महिन्यात दयानंदांच्या विचारांचा महाराष्ट्रात येऊन प्रचार करतात. यावर्षी त्यांच्या समवेत सहारनपुरचे आर्य भजनोपदेशक पं.ऋषिपालजी पथिक प्रचारासाठी आले होते. या दोघांनीही

जालना, परभणी, नांदेड, देगलूर, शहापुर, मुदखेड व धर्माबाद या ठिकाणी वैदिक विचारांचा प्रभावीपणे प्रचार केला. तसेच विविध ठिकाणी शंकासमाधान, पारिवारिक सत्संग व विद्यार्थ्यांनाही वैदिक मानवतेचे सिद्धांत आपल्या रसाळ वाणीतून पटवून सांगितले. भजनोपदेशक पं.ऋषिपालजींनी आपल्या गोड आवाजातून संगीतमय कार्यक्रमांचे सादरीकरण केले.

हिसार(हरियाणा) येथून प्रचारासाठी आलेले शांत, सरळ व सौम्य स्वभावाचे वानप्रस्थी विद्वान आचार्य पं.आजादमुनिजी व मुजफ्फरनगर(उ.प्र.) येथून आमंत्रित जुन्या पिढीतील आर्य भजनोपदेशक पं.कर्मवीरजी आर्य यांनी लातूरच्या रामनगर व भक्तीनगर आर्य समाजात वैदिक धर्माचा प्रचार केला. त्यानंतर शिवणखेड, रेणापुर, किल्लेधारुर, अंजनडोह, अंबाजोगाई येथे आपल्या प्रभावशाली कार्यक्रमातून वैदिक तत्वज्ञान विषद केले.

दिल्ली येथून आलेले आचार्य पं.भूदेवजी शास्त्री आणि मतौली-देवबंद(उ.प्र.) येथून आमंत्रित करण्यात आलेले आर्यभजनोपदेशक राजवीरसिंहजी आर्य यांनी उमरगा, गुंजोटी, औराद, निलंगा, शहाजानी औराद व उदगीर येथे अतिशय चांगल्या प्रकारे आर्य विचारांचा प्रचार व प्रसार केला. तसेच वैदिक सिद्धांत हेच मानवी जीवनाच्या सर्वांगिण कल्याणासाठी कसे उपयुक्त आहेत, हे मांडले.

गुरुकुल आश्रम ततारपुर(हापुड-उ.प्र.)या ठिकाणाहून महाराष्ट्रात पहिल्यांदाच प्रचारासाठी आलेले आचार्य डॉ.ओमव्रतजी शास्त्री यांनी आपल्या विद्वत्तापूर्ण वाणीतून वेदांचे विश्वकल्याणकारी विचार प्रचारादरम्यान मांडले. त्यांच्यासमवेत महाराष्ट्रात नेहमीच श्रावणीसाठी येणारे देहरी-सहारनपुर(उ.प्र.) येथील आर्य भजनीक पं.सुखपालजी हे होते. या दोघांनीही पुण्यातील वारजे, मालवाडी, नानापेठ व पिंपरी या आर्य समाजात केलेल्या प्रचारकार्याची आर्य जनतेने फारच प्रशंसा केली. तसेच त्यांनी नाशिकच्या देवळाली कॅम्प, भगुर व पंचवटी या आर्य समाजांसह धुळे येथील आर्य समाजातही अतिशय उत्तम प्रकारे वेदप्रचार केला.

हरदोई(उ.प्र.) चे विद्वान व रसायनशास्त्राचे निवृत्त प्रो.विमलकुमार आर्य व मुजफ्फरनगर उ.प्र. येथील आर्य भजनीक पं.संदीपजी वैदिक यांनी विशेष परिश्रम घेऊन ग्रामीण भागात प्रचाराचे कार्य केले. त्यांची सुरुवात हिंगोली येथील आर्य समाजाच्या प्रचार कार्यक्रमापासून सुरु झाली. नंतर त्या जिल्ह्यातील आखाडा बाळापूर, घोडा, जरोडा या गावांसह नांदेड जिल्ह्यातील येहळेगांव, मरडगा, भाटेगांव, तळणी, शिऊर, निवघा,

हदगांव, कंजारा, तामसा या गावांमध्ये वेदप्रचाराचे कार्य केले. पं.बाबुरावजी काळे गुरुजी यांनी त्यांना मोलाचे सहकार्य केले.

वरील उत्तर भारतीय विद्वानांसोबतच महाराष्ट्रातीलही विद्वानांनी श्रावणी प्रचार कार्यात मोठे योगदान दिले. सोलापुरचे पं.राजवीर शास्त्री यांनी लोहारा, करडखेल, गांजुर व सुगाव येथे प्रचार केला. तर पं.सुधाकरजी शास्त्री यांनी हाळी, साकोळ, अजनी, बिबराळ, उजेड येथे प्रचाराचे कार्य केले. या दोन्ही पंडितासमवेत हदगांवचे भजनीक पं.सोगाजी घुन्नर होते. लातूरचे सुस्वभावी मराठी विद्वान् व निवृत्त शिक्षक पं.श्रीरामजी आर्य यांनी व सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांनी पूर्ण एक महिनाभर लातूर व उस्मानाबाद जिल्ह्यातील गावांमध्ये मोठ्या तळमळीने वैदिक धर्माचा प्रसार केला. उस्मानाबाद, कळंब, वाशी, ईट, घाटपिंपरी, टाका, रामेगांव, मोगरगा, मंगरुळ, धनेगांव, वलांडी, टाकळी इत्यादी ठिकाणी आहे त्या परिस्थितीत त्यांनी वैदिक धर्माची शिकवण श्रोत्यांसमोर मांडली.

जालन्याचे संतोष आर्य व नशिराबादचे श्री चैतन्य रडे यांनी भुसावळ व नशिराबाद या ठिकाणी कार्यक्रम घडवून आणले. तर सभेचे नवनियुक्त प्रधान श्री योगमुनिजी व प्रा.डॉ.अखिलेशजी शर्मा यांनी जळगांव येथे जाऊन नव्या कार्यकर्त्यांना संघटीत केले आणि श्रावणीनिमित्त वेदांचा विचार नव्या पिढीसमोर मांडला.

श्री सदाशिवराव जगताप व आर्यमुनिजी यांनी गिरवली, चांदवड, अंजनसोंडा व मानेवाडी येथे प्रचाराचे कार्य केले. तसेच श्री अशोकराव कातपुरे व आर्यमुनिजी यांनी निलंगा तालुक्यातील मदनसुरी, येलमवाडी, बड्डुर, कासार शिरसी, हनुमंतवाडी, अंबुलगा या भागात प्रचार केला. वशिष्ट आर्य यांनी बनसारोळा, शिराढोण येथील शाळांमध्ये व्याख्याने दिली. डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी मालेगाव येथे जाऊन तेथील आर्य कार्यकर्त्यांच्या कुटुंबात यज्ञ व सत्संगाचे कार्यक्रम पार पाडले. लातूरचे प्रा.चंद्रेश्वरजी शास्त्री व त्यांच्या धर्मपत्नी सौ.कांचनदेवी यांनी मुशिराबाद गावात भजन व प्रवचनाच्या माध्यमाने वैदिक विचार पटवून सांगितले. नांदेडचे आर्यलेखक व पुरोहित पं.श्री नारायणराव कुलकर्णी अहमदपुर येथे जाऊन कार्यकर्त्यांना प्रेरित केले व श्रावणी कार्यक्रम घडवून आणला. पं.विज्ञानमुनिजी व म्हाळप्पा दुधभाते यांनी उमरगा तालुक्यातील कांही गावात वेदप्रचाराचे कार्य केले. यांसोबतच इतरही पंडितांनी वेदप्रचार कार्यात सहभाग घेतला. **या सर्वांचे प्रांतीय सभेच्या वतीने मन:पूर्वक आभार व धन्यवाद..!**

**-० वार्ता विशेष ०-**

# आर्य समाजातर्फे दंगलग्रस्तांना मदत

मागील दोन महिन्यांपूर्वी क्षुल्लक कारणांमुळे औरंगाबादेत उसळलेल्या दंगलीत जाळपोळ, दगडफेकीचे प्रकार घडले. यात कांही निष्पाप लोक जखमी झाले, तर कांहीची घरे व दुकाने उध्वस्त होऊन नागरिकांचे संसार उघड्यावर आले. अशा कुटुंबियांना आर्यसमाज, संभाजीनगरतर्फे आर्थिक मदत देण्यात आली. या दुर्दैवी घटनेदरम्यान महेंद्र रामचंद्र चौधरी हे सायकलने घरी जात असतांना त्यांच्या डोळ्यास दगड लागला. यामुळे त्यांचा उजवा डोळा निकामी झाला. त्यांना उपचारासाठी आर्य समाजातर्फे रू.५००० ची मदत करण्यात आली, तर ज्यांच्या घराची नासधूस झाली होती. अशा कुटुंबियांना भांडी व गृहोपयोगी वस्तू देऊन त्यांना धीर देण्यात आला. यावेळी आर्य समाजाचे प्रधान जुगलकिशोर दायमा, मंत्री दयाराम बसैये, कोषाध्यक्ष ॲड.जोगेंद्रसिंह चौहान हे व इतर कार्यकर्ते उपस्थित होते.

# आर्य महासंमेलन- विशेष सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा आणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभेच्या संयुक्त विद्यमाने दिल्लीच्या स्वर्णजयंती पार्क, रोहिणी सेक्टर १०, दिल्ली परिसरात येत्या दि.२५, २६, २७ व २८ ऑक्टोबर २०१८ या ४ दिवशी आयोजित 'आंतर्राष्ट्रीय आर्य महासंमेलना'त राज्यातील सर्व आर्य समाजाच्या सदस्यांनी, कार्यकर्त्यांनी आणि नागरिकांनी मोठ्या संख्येन सहभागी होऊन आर्यजनांची संघटनात्मक सामर्थ्यशक्ती प्रदर्शित करावी, असे आवाहन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान श्री योगमुनिजी, मंत्री श्री राजेंद्र दिवे व इतर पदाधिकाऱ्यांनी केले आहे.

महाराष्ट्र राज्यातून संमेलनास जाणाऱ्या आर्य कार्यकर्त्यांनी आपल्या समवेत दोन्ही बाजूंनी छायांकित केलेल्या आधारकार्डाची व निवडणुक ओळखपत्राची प्रत व तसेच त्यावर आपले पूर्ण नाव, मोबाईल क्रमांक व स्वत:ची सही करून सोबत ठेवावे. संमेलनात प्रवेश नोंदणी करतांना हे सर्व अत्यंत गरजेचे आहे. तसेच आपल्या समवेत नेहमीच ओळखपत्र ठेवावे. कार्यकर्त्यांनी दिल्लीला जातांना आपापल्या आर्य समाजांचे बॅनर्स, ओ३म् ध्वज सोबत घ्यावेत. जातांना व येतांना सर्वांनी एकत्रित प्रवास करावा व आपल्या समुहाचा एक प्रमुख नेमावा असेही आवाहन सभेने केले आहे.

# संग्रामदिनी प्रा.सोमवंशी यांचे परळीत व्याख्यान

निजामाच्या जुलमी अत्याचाराला जुगारून मानवतेचे स्वराज्य स्थापन्याकरिता हैदराबादच्या असंख्य देशभक्तांनी दिलेले बलिदान आणि केलेला संघर्ष म्हणजे भारतीय इतिहासाचा सोनेरी अध्याय होय. हैद्राबादचा हा यशस्वी स्वातंत्र्यलढा आधुनिक भारताच्या निर्मितीसाठी क्रांतीचा दीपस्तंभ ठरेल, असे प्रतिपादन प्रांतीय सभेचे उपमंत्री व इतिहासाचे अभ्यासक प्रा.श्री अर्जुनराव सोमवंशी यांनी केले.

हैद्राबाद(मराठवाडा) मुक्ती दिना निमित्त परळी येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयात आयोजित, "**मुक्तीसंग्राम एक शौर्यसमर**" या विषयावर ते प्रमुख व्याख्याते म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी उपप्राचार्य डॉ.व्ही.जे. चव्हाण होते. श्री सोमवंशी यांनी आपल्या अभ्यासपूर्ण भाषणातून हैद्राबाद लढ्यावर विस्तृत प्रकाश टाकला. भारतावर प्रारंभापासून झालेल्या विविध विदेशी आक्रमणांची कारणमीमांसा करीत भारतीय नेमके कुठे चुकले? यावर त्यांनी यथोचित भाष्य केले. यातील आर्यसमाजाचे योगदान व कार्य हे स्वातंत्र्यालढ्याबरोबरच वैचारिक देखील होते, असेही ते म्हणाले.

यावेळी उपप्राचार्य डॉ.जगतकर, प्रा.सूर्यवंशी, पर्यवेक्षिका प्रा.सौ.वाघमारे पाहुण्यांचा परिचय डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रास्ताविक प्रा.डॉ.शेप यांनी तर संचलन प्रा.डॉ.वीरश्री आर्य यांनी केले.

# संस्कृतभाषेमुळे राष्ट्राची नवनिर्मिती -डॉ.चंद्रपाल शास्त्री

संस्कृतातील संस्कार व विचार हे समाज व राष्ट्राच्या नवनिर्मितीचे मौलिक कार्य करतात. याकरिता संस्कृत भाषेचा प्रसार होणे आवश्यक आहे, असे प्रतिपादन गाजियाबाद(उ.प्र.) येथील अभ्यासक प्रा.चंद्रपालजी शास्त्री यांनी केले.परळी येथे आर्य समाजात आयोजित सामूहिक संस्कृत दिन समारंभात श्री शास्त्री प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी संस्थेचे सचिव श्री उग्रसेन राठौर होते. यावेळी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमाचे आचार्य श्री सत्येंद्र विद्योपासक, संस्थेचे अध्यक्ष जुगलकिशोर लोहिया, संज्योत लाहोटी, पं.रामकुमार आर्य आदी मान्यवर उपस्थित होते. श्री शास्त्री म्हणाले संस्कृत भाषा ही भारतीय संस्कृतीचा आत्मा आहे. शाश्वत सुखाची गुरुकिल्ली संस्कृत ज्ञानात समाविष्ट आहे. यावेळी संस्कृत श्लोक व भाषण स्पर्धेतील यशवंतांना पारितोषिके देण्यात आली. प्रास्ताविक प्रा.अरुण चव्हाण, संचालन सौ.पल्लवी फुलारी, आभार प्रदर्शन प्रा.डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांनी केले.

-o शोक वार्ता o-

## संकेत नावंदे यांचे आकस्मिक निधन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे वरिष्ठ कार्यकर्ते, पत्रकार व साहित्यिक प्राचार्य श्री देवदत्त तुंगार आणि प्रा.डॉ.सौ.शारदादेवी तुंगार यांचे नातू(मुलीचे सुपुत्र) श्री संकेत किशोर नावंदे यांचे दि.२९ ऑगस्ट २०१८ रोजी रात्री 'डेंगू' या आजाराने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी ते अवघे २८ वर्षे वयाचे होते. त्यांचे पश्चात पत्नी, आई, वडील, भाऊ, बहिण व आजी-आजोबा असा परिवार आहे. गेल्या दोन महिन्यापूर्वीच त्यांचा विवाह झाला होता. लातूर येथील महाराष्ट्र ग्रामीण बँकेच्या उपशाखाधिकारी पदावर ते कार्यरत होते. कृष्णुर ता.नायगांव जि.नांदेड येथील मूळचे रहिवाशी युवक श्री नावंदे हे सुस्वभावी, सर्वांशी मिळूनं मिसळून वागणारे, परोपकारी आणि प्रेमळ होते. आठवड्यापूर्वीच ते डेंगूच्या तापाने आजारी पडले. तज्ज्ञ डॉक्टरांकडून त्यांच्यावर कसोशीने उपचार करण्यात आले, पण यश आले नाही. त्यांच्या अकाली निधनाने नावंदे व तुंगार परिवारावर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे. त्यांच्या पार्थिवावर कृष्णुर येथे शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

## श्रीमती ललितादेवी मेदक्कर यांचे निधन

जुन्या पिढीतील एक कर्तव्यदक्ष शिक्षिका, ज्येष्ठ नागरिक श्रीमती ललितादेवी श्यामराव मेदक्कर यांचे दि.१६ जुलै रोजी पहाटे ५ वा. वृद्धापकाळाने नाशिक येथे दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ८५ वर्षे वयाच्या होत्या. मुळच्या निजामाबाद येथील रहिवासी असलेल्या श्रीमती ललिताबाईंच्या मागे दोन मुले श्री सतीश(नांदेड), श्री सुरेश(नाशिक), दोन कन्या श्रीमती शैलजा दिगंबर तोटे(लातूर), सौ.प्रा.सुनीता बाबुराव पाटील(कळंब) जावई, नातवंडे असा परिवार आहे.

स्व.श्रीमती साळुंके, प्रा.डॉ.सौ. विमलाबाई सु.काळे व सौ.ज्योतीदेवी श.डुमणे यांच्या त्या भावजय होत्या. पति (स्व.)श्यामरावजींच्या वनखात्यातील नोकरीमुळे त्या महाराष्ट्रातच स्थायिक झाल्या होत्या. आपल्या दोन्ही ननंदेच्या शिक्षण व आंतरजातीय विवाह जुळवणी कार्यात त्यांनी मोठे पाठबळ दिले. तसेच आपल्या दोन्ही मुलांचेही जातपात जोडून विवाह घडवून आणले.त्या मनमिळावू, सुस्वभावी, कुटुंबवत्सल,संघर्षशील व संस्कारप्रदात्या महिला होत्या. स्व.श्रीमती मेदक्कर यांच्या पार्थिवावर नाशिक येथे दुसऱ्या दिवशी सकाळी अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

# सौ. आशाबाई डुमणे यांचे देहावसान

लातूर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते श्री शीतलचंद्र डुमणे यांच्या पत्नी सौ.आशाताई यांचे दि.११ सप्टेंबर २०१८ रोजी रात्री ७.४५वा. प्रदीर्घ आजाराने दु:खद निधन झाले. मृत्यूसमयी त्या ६८ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या पश्चात् पती, तीन मुले, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

आशाताई गेल्या २१ वर्षांपासून मेंदू पक्षाघातामुळे आजारी होत्या. इतक्या कालावधीत अंथरुणावर असतांना त्यांची पती, मुले, सुना व कुटुंबियांनी मोठ्या श्रद्धेने सेवासुश्रूषा केली. सातत्यपूर्ण औषधोपचार व सेवेत त्यांनी कधीही खंड पडू दिला नाही. रुग्णशय्येला खिळून असलेल्या एका आजारी व्यक्तीचा एवढ्या मनोभावे चाललेला हा 'सेवायज्ञ' आजच्या सेवा व श्रद्धाविहीन होत चाललेल्या नव्या पीढीसाठी सत्प्रेरणेचा आदर्श होय. त्यांच्यावर लातूरच्या विविध खाजगी रुग्णालयांसह सोलापूर व इतरत्र उपचार करण्यात आले. सौ.आशाबाई या आत्मिक व मानसिक दृष्ट्या कणखर व मजबूत होत्या. कळंब येथील माजी आमदार देवदत्त मोहिते यांच्या आशाबाई या कन्या होत. त्यांच्या पार्थिवावर पं.ज्ञानकुमार आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली दुसऱ्या दिवशी शहरातील खाडगांव रोड स्मशानभूमीत अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

# उद्धव शास्त्री यांना पितृशोक

गुरुकुलचे स्नातक व बीड येथील चंपावती विद्यालयाचे संस्कृताध्यापक श्री उद्धव शास्त्री(घाडगे) यांचे वडील श्री श्यामराव गणपतराव घाडगे यांचे नुकतेच कांही महिन्यांपूर्वी हृदयविकाराने आकस्मिकरित्या दु:खद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७४ वर्षे वयाचे होते.

त्यांचे पश्चात् पत्नी, दोन मुली, तीन मुली जावई, नातवंडे असा परिवार आहे. कष्टकरी शेतकरी म्हणून ओळख असलेले श्री श्यामरावजी यांच्या मृत्युमुळे गाव व परिसरात हळहळ व्यक्त होत आहे. त्यांच्या पार्थिवावर त्यांचे गावी मौजे भारज ता.अंबाजोगाई येथे शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले. गुरुकुलाचे सर्व स्नातक मित्रवर्ग व आर्यजनांनी घाडगे कुटुंबाचे सांत्वन करून दिवंगत आत्म्यास श्रद्धांजली वाहिली.

**दिवंगत आत्म्यांना प्रांतीय सभा व सर्व आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली!**

# प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन वक्तृत्त्व स्पर्धा

पू.पिताश्री स्व.विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती

## १) राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१८

विषय:-म.दयानंदांचे ईश्वरविषयक विचार(सत्यार्थ प्रकाश-सातवा सम्मुलास)

**रविवार दि.०९.१२.२०१८ / वेळ सकाळी ११ वा.**

**स्थळ :- आर्य समाज, हिंगोली**

१) स्पर्धेत केवळ माध्य. विद्यालयाच्या (इ.८,९,१०वी) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाजातर्फे ३-३ स्पर्धक पाठवावेत.

३) प्रत्येक स्पर्धकास भाषणासाठी (मराठी/हिंदी) ८(६+२) मिनिटे वेळ दिला जाईल.

४) प्रवेश शुल्क रु.५०/- भरून दि. २०.११.२०१६ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.

५) पारितोषिके १) रु.१५००, २) रु.११००, ३) रु.७७५, रु.१०० चे वैदिक साहित्य

सौ.कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले(आनंदमुनिजी) यांच्या गौरवार्थ

## २) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१८

विषय : 'जगाच्या निर्मितीविषयीचे दयानंदांचे विचार'

(सत्यार्थ प्रकाश-८वा सम्मुलास)

**शनिवार दि.२२.१२.२०१८ / वेळ स.११ वा.**

**स्थळ :- मा.दीनानाथ मंगेशकर महाविद्यालय, औराद शहा.**

१) स्पर्धेत ११वी ते पदवी वर्गातील महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.

३) प्रत्येक स्पर्धकास भाषणासाठी (मराठी/हिंदी) ८(६+२) मिनिटे वेळ दिला जाईल.

४) प्रवेश शुल्क रु.५०/- भरून दि. १०.१२.२०१६ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.

५) पारितोषिके १) रु.२०००, २) रु.१५००, ३) रु.१०००, रु.१०० चे वैदिक साहित्य

|| कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ||

## श्रेष्ठ मानव बनों !  वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

# महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

( पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

## मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

## सभा बैठक

लातूर की आर्यसमाज रामनगर में आयोजित प्रान्तीय सभा की त्रैमासिक बैठक में उपस्थित सभा के पदाधिकारी गण।

## संस्कृत दिन

परली के संस्कृत दिवस समारोह में पुरस्कार देते हुए आचार्य चन्द्रपालजी, जुगलकिशोरजी लोहिया, आचार्य सत्येन्द्रजी, उग्रसेनजी राठौर, संज्योत लाहोटी।

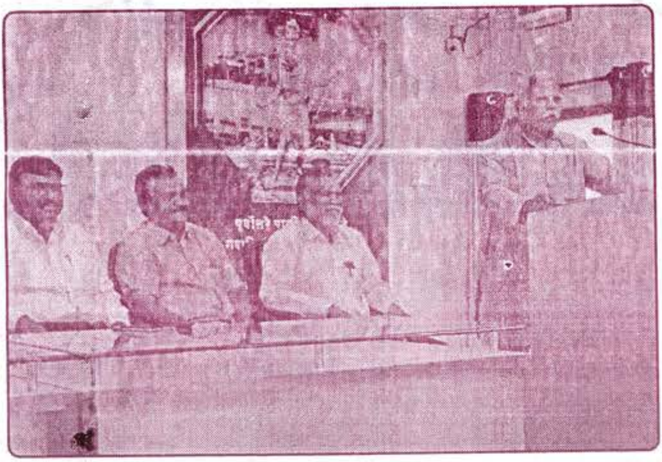

परली के वैद्यनाथ महाविद्यालय में हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम दिवस पर मार्गदर्शन करते हुए सभा के उपमन्त्री प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी। मंचपर हैं उपप्राचार्य डॉ.चव्हाण, श्री फड, प्रा.आंधळे।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ______________________

______________________

______________________

______________________

प्रेषक –
**मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,**
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

॥ ओ३म् ॥

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
**लोकमान्य शिक्षण संस्था**, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातुर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्त्व
**स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर**
की पावन स्मृतिमें उनकी सहधर्मचारिणी
**श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर**
की ओर से **वैदिक गर्जना** मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

जीवेत् शरदः शतम् !